राज किसान सुविधा मोबाइल ऐप (कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन एवं कृषि विपणन विभाग का एकीकृत प्लेटफार्म) क्यूआर कोड स्कैन करके डाउनलोड करें।

खेती री बातां

विभागीय कार्यक्रम "कृषि ज्ञान धारा" का सजीव प्रसारण प्रत्येक गुरूवार सायं 3:00 से 4:00 बजे ब्लाक मुख्यालय पर कार्यक्रम से जुड़े या यू ट्यूब चैनल (कृषि विभाग राजस्थान) पर देखें।

वर्ष–28 अंक–06 मासिक पत्रिका आर.एन.आई. – 70296/98 प्रकाशन– 5 जून, 2025 वार्षिक शुल्क– 12 रुपये

विकसित कृषि संकल्प अभियान–29 मई से कृषि वैज्ञानिक और अधिकारी देशभर में किसानों से संवाद कर उत्पादकता बढ़ाने की जानकारी देंगे

केन्द्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सोमवार को सभी राज्यों के कृषि मंत्रियों के साथ विकसित कृषि संकल्प अभियान की जानकारी देने व तैयारियां सुनिश्चित करने के लिए वीसी का आयोजन किया। वीसी में केन्द्रीय कृषि मंत्री ने बताया कि केन्द्रीय कृषि मंत्रालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.) और सभी राज्यों के कृषि विभागों के साथ मिलकर आगामी 29 मई से 12 जून तक पूरे देश में विकसित कृषि संकल्प अभियानचलाएगा। इसके तहत देश के विभिन्न गांवों में किसानों को खरीफ फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के बारे में जानकारी दी जायेगी।

केन्द्रीय कृषि मंत्री ने एक राष्ट्र, एक कृषि और एक टीम का नारा देते हुए कहा कि इस अभियान में किसान वैज्ञानिकों से चर्चा करेंगे। चर्चा में आए सुझाव और समस्याओं पर वैज्ञानिक शोध करेंगे और उसके अनुसार समस्याओं का समाधान किया जायेगा। इस अभियान का उद्देश्य खेती को अधिकतम लाभप्रद बनाना है।

राजस्थान के कृषि मंत्री डॉ0 किरोड़ी लाल मीणा ने वीसी में सुझाव दिया कि विकसित कृषि संकल्प अभियान में किसानों को खरीफ फसलों की जानकारी के साथ–साथ उद्यानिकी गतिविधियों की भी जानकारी दी जाये, जिससे किसानों की आय बढ़े और उन्हें अधिक विकल्प मिले।

इस अभियान का मकसद खरीफ में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों, पशुपालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन आदि से सम्बन्धित आधुनिक तकनीकों के बारे में किसानों को जानकारी देना है। किसानों को केन्द्रीय कृषि मंत्रालय और राज्य के कृषि विभाग के अधिकारियों, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न सरकारी योजनाओं और नीतियों की भी जानकारी दी जायेगी, साथ ही मृदा स्वास्थ्य कार्ड के लाभों के बारे में भी जागरूक किया जायेगा।

यह 15 दिवसीय अभियान लगभग पूरे देशभर में चलेगा, जिसमें किसानों से सीधा संवाद किया जायेगा। इसमें कृषि वैज्ञानिक, मंत्रालय के अधिकारी और कर्मचारी गांव–गांव जाकर किसानों से मिलेंगे। उन्हें खेती की नई तकनीकें बीज और पौध की किस्मों और योजनाओं की जानकारी देंगे। किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए भी प्रेरित किया जायेगा। अभियान में कृषि विज्ञान केन्द्रों के एस.एम.एस., आई.सी.ए.आर. संस्थान के वैज्ञानिक, राज्य कृषि, बागवानी, पशुपालन और मत्स्य विभागों के अधिकारी, प्रगतिशील किसान, कृषि उद्यमी, एफ.पी.ओ. और स्वयं सहायता समूह के सदस्य शामिल होंगे। अभियान की निगरानी और रिपोर्टिंग के लिए कृषि विभाग में कन्ट्रोल रूम बनाये जायेंगे।

युवाओं से बदलेगी खेती की तस्वीर, युवा कृषक संवाद कार्यक्रम का आयोजन कृषि विभाग की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ ग्रामीण क्षेत्र के प्रत्येक कृषक को मिले कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री

कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोडी लाल मीणा की अध्यक्षता में रविवार को राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर के महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम में ''युवा कर्षक संवाद'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में कृषि के प्रति युवाओं में रुचि पैदा करने, कृषि संबंधी योजनाओं एवं उन्नत तकनीकी की जानकारी मुहैया कराने और कृषि क्षेत्र से संबंधित समस्याओं को समझ कर समाधान निकालने के उद्देश्य से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में किसानों को कृषि में नवाचार, जैविक खेती, बागवानी, फूलों की खेती, माइक्रो इरीगेशन, बीज मिनिकिट वितरण, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, जिप्सम वितरण, प्रधानमंत्री फसल बीमा, जैविक खेती, ड्रोन तकनीकी, जल संरक्षण, स्मार्ट कृषि तकनीकी योजना, कस्टम हायरिंग सेंटर और प्रगतिशील कृषक भ्रमण आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई और उनकी समस्याओं का समाधान किया गया। कृषि मंत्री ने कहा कि यह कार्यक्रम किसानों की समस्याओं को समझने के साथ ही योजनाओं के सुचारू क्रियान्वयन और किसानों की आय वृद्धि की दिशा में एक ठोस कदम साबित होगा।

कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री ने कहा कि हमारे प्रदेश की आधी से अधिक आबादी कृषि पर आधारित हैं। कृषि न केवल आजीविका का प्रमुख साधन है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था की रीढ भी है। आज के दौर में कृषि क्षेत्र में अनेक चुनौतियां आ रही है, युवा वर्ग की भागीदारी इस क्षेत्र में नई ऊर्जा और नवाचार ला सकती है।

उन्होंने बताया कि ''युवा कृषक संवाद'' कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं को कृषि क्षेत्र में प्रेरित करना, उन्हें आधुनिक तकनीकी से अवगत कराना और उनके विचारों का आदान–प्रदान कर एक मजबूत कृषि तंत्र विकसित करना है।

इस कार्यक्रम मेंकृषि मंत्री ने कहा कि कृषि पैदावार कम होती जा रही है, जिससे युवाओं का खेती से मोहभंग हो रहा है। इसलिए राज्य सरकार द्वारा युवाओं में कृषि के प्रति रुचि पैदा करने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया हैं साथ ही ग्राम सभा की बैठकों में भी यह सुनिश्चित किया जाएगा कि कृषि विभाग की योजनाओं की जानकारी सभा में कृषकों को दी जाये। विभाग का प्रयास रहेगा कि कृषि विभाग की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी एवं उनका लाभ ग्रामीण क्षेत्र के प्रत्येक कृषक को मिले।

''युवा कृषक संवाद'' कार्यकमों से न केवल युवाओं में कृषि के प्रति रुचि बढ़ती है, बल्कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर भी सृजित होते हैं। यह संवाद कार्यक्रम ऊर्जावान युवाओंको आधुनिक तकनीकी को जोड़कर प्रदेश की कृषि को नई दिशा देने का प्रयास है।

फलदार पौधों की रोपाई एवं देखभाल

सीमित सिंचाई जल से अधिक आमदनी के लिये फल–बगीचे लगाकर फसल विविधीकरण कर सकते हैं। फलदार पौधों की बढ़वार उसके लगाने के ढंग एवं देखभाल पर निर्भर करती है इसलिये अच्छी बढ़वार के लिये गड्डों की तैयारी पूर्ण कर सावधानी से पौधे लगाने का कार्य करना चाहिये।

बाग लगाने से पूर्व तैयारी

बाग लगाने के लिये ऐसे स्थान का चुनाव किया जाना चाहिये जहाँ सिंचाई की सुविधा हो तथा खेत के चारों ओर बाड़ हो। सर्दियों में शीत लहर व गर्मियों में लूसे फलदार पेड़ों को प्रभावित होने से बचाने के लिये बाग लगाने से पूर्व खेत के उत्तर–पश्चिम दिशा में जल्दी बढ़ने वाले वायुरोधी वृक्ष जैसे अमलताश, करंज, शहतूत, लसोड़ा अथवा देशी आम, शीशम, जामुन इत्यादि लगाना ठीक रहता है। जहाँ फलदार पेड़ लगाना हो उस मिट्टी का परीक्षण कराना चाहिये।

गड्डे खोदने का समय

फलदार पौधे अधिकतर वर्षा के मौसम में लगाये जाते है। इसलिये गड्डे खोदने का सबसे सही समय मई–जून माह होता है, क्योंकि इस समय तेज गर्मी पड़ने से गड्डे तप जाते है। जिससे मिट्टी में मौजूद कीड़े तथा बीमारी के जीवाणु नष्ट हो जाते हैं, जहाँ सिंचाई की सुविधा हो वहाँ फरवरी–मार्च में भी पौधे लगाये जा सकते हैं। फरवरी–मार्च में पौधे लगाने से 15–20 दिन पहले गड्डे खोदे जावें।

गड्डे का आकार व पौधों के मध्य दूरी

बड़े पौधों जैसे आम, आवला, बेलपत्र, संतरा, किन्नों, बेर आदि के लिये गड्डे का आकार तीन फीट लम्बा, तीन फीट चौड़ा एवं दो फीट गहरा रखें। अनार, नींबू, अमरूद के लिये गड्डे का आकार दो फीट लम्बा, दो फीट चौड़ा एवं दो फीट गहरा रखें। पपीता में गड्डे का आकार डेढ़ फीट लम्बा, डेढ़ फीट चौड़ा एवं डेढ़ फीट गहरा रखें।

शेष भाग पृष्ठ 4 पर .....

इस अंक में....

- जून माह के कृषि कार्य
- परख...

पृष्ठ 2

- प्रमुख खरीफ फसलों की उन्नत कृषि तकनीक

पृष्ठ 3

- सफेद लट का समेकित प्रबन्धन...
- आजमा कर तो देखिये...

पृष्ठ 4

जून माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

★ सिंचित मूंगफली की बुवाई का उपयुक्त समय जून माह के प्रथम सप्ताह से दूसरे सप्ताह तक है। मिट्टी जाँच के आधार पर अंतिम जुताई से पहले प्रति हैक्टर 250 किलो जिप्सम मिलाए। मूंगफली के खेत में प्रति हैक्टर 60 किलो फॉस्फेट और 15 किलो नत्रजन (375 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट व 35 किलो यूरिया) बुवाई के पहले नायले से ऊरकर देना चाहिए। फॉस्फेट तत्व की पूर्ति सिंगल सुपर फॉस्फेट (एस.एस.पी.) द्वारा किया जाना अधिक फायदेमंद है।

★ ज्वार में तना मक्खी कीट नियंत्रण के लिए मानसून की पहली वर्षा होने के एक सप्ताह के अन्दर ही बुवाई करें। देर से बोई जाने वाली फसल में कार्बोफ्यूरान 3 प्रतिशत कण 15 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से उमरों में डालकर बुवाई करें।

★ खरीफ फसलों में खास तौर से दलहनी फसलों में कातरे का प्रकोप होता है। कीट की लट वाली अवस्था ही फसलों को नुकसान पहुँचाती है। इस कीट के पतंगों को नष्ट करने के लिए प्रकाश पाश का उपयोग करें। इसके लिए मानसून की वर्षा प्रारम्भ होते ही खेतों की मेड़ों और चारागाहों पर गैस की लालटेन या बल्ब जलायें और इनके नीचे 5 प्रतिशत मिट्टी का तेल पानी में मिलाकर किसी बड़े बर्तन में रख दें। प्रकाश पर कातरा के पतंगे आकर्षित होंगे तथा नीचे मिट्टी के तेल मिले पानी में गिरकर मर जायेंगे।

★ कातरे की छोटी अवस्था की लटें फसल में दिखाई देते ही क्यूनॉलाफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से फसल पर भुरकाव करें।

★ क्षारीय एवं लवणीय मिट्टी में बोने से पहले बाजरे के बीज को 1 प्रतिशत सोडियम सल्फेट के घोल में 4 घण्टे तक भिगोकर साफ पानी से धोकर छाया में सुखाने के बाद बीज को कवकनाशी से उपचारित कर बोयें। ऐसा उपचारित बीज का खारी मिट्टी में भी अंकुरण अच्छा होगा।

★ बाजरे में गून्दिया या चैंपा से फसल को बचाने हेतु बीज को नमक के 20 प्रतिशत घोल (एक किलो नमक एवं 5 लीटर पानी) में लगभग 5 मिनट तक डुबोकर हिलायें। तैरते हुए हल्के बीज व कचरे को हटा देवें। शेष बचे हुए बीजों को साफ पानी से धोकर अच्छी प्रकार छाया में सुखाने के बाद बोने के काम में लेवें।

★ मूंगफली में गलकट (कॉलर रॉट) रोग से बचाव के लिये बुवाई से पहले प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थाईरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या 2 ग्राम मैन्कोजेब से उपचारित करें। रासायनिक फंफूदीनाशी का कम उपयोग करना हो तो बीज को क्रमशः थाइरम (1.5 ग्राम), ट्राइकोडर्मा (10 ग्राम) एवं राइजोबियम कल्चर (3 पैकेट) प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें। इसके साथ ही बुवाई पूर्व ट्राईकोडर्मा 2.5 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से 500 कि.ग्रा. गोबर की खाद में मिलाकर भूमि में मिलायें।

बागवानी

★ नींबू वर्गीय फलदार पौधों में रोगों एवं अन्य कारणों (जलवायु संबंधी)

से तुड़ाई पूर्व फलों का गिरना एवं तुड़ाई उपरान्त फल सड़न से बचाव हेतु कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू. पी. 1 ग्राम प्रति लीटर पानी या प्रोपीनेब 70 डब्ल्यू. पी. 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या जैव नियंत्रक यीस्ट ''स्पोरिडीयोबोलस पैरारोजेअस''(के एफ वाई –1) 10 सी.एफ.यू. प्रति मिली. पानी के घोल में पाँच छिड़काव क्रमशः मार्च, अप्रेल, अगस्त, सितम्बर एवं अक्टूबर माह में करें। अप्रेल, अगस्त एवं सितम्बर माह में छिड़काव के लिये प्रयोग किये जाने वाले घोल में जिब्रेलिक एसिड 20 मिलीग्राम प्रति लीटर घोल की दर से मिलायें।

★ बेर में कांट–छांट करें जिससे नए प्ररोह में अधिक संख्या में फूल व फल आ सकें। काटे गये स्थान पर फंफूदनाशी बोर्डेक्स मिश्रण का लेप करना चाहिये।

★ नींबू वर्गीय पौधों के कीटों में पर्णसुरंग कीट का लार्वा बहुत छोटा होता हैं जो नींबू की पत्ती की सतह के अन्दर टेढ़ी–मेढ़ी सुरंग बनाता है जो चाँदी के रंग की तरह चमकती दिखाई पड़ती है। प्रभावित पत्तियाँ किनारों से अन्दर की तरफ मुड़ जाती हैं। जिससे नई बढ़वार बुरी तरह से प्रभावित होती है। वर्षा ऋतु में इसका प्रकोप ज्यादा होता है। प्रभाव नजर आने पर क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 2 मिली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें।

★ नींबू में केंकर रोग से पत्तियों, टहनियों व फलों पर भूरे रंग के खुरदरे व कार्कनुमा धब्बे स्पष्ट दिखाई देते हैं। रोगी पत्तियाँ गिर जाती है। टहनियों एवं शाखाओं पर लम्बे घाव बनते हैं, जिससे टहनियाँ टूट जाती है, फलों पर रोग के धब्बों के कारण इनका बाजार मूल्य बुरी तरह प्रभावित होता है एवं रोगग्रस्त फल शीघ्र ही सड़ने लगते हैं। नियंत्रण हेतु रोगग्रस्त पत्तियों और टहनियों को नष्ट करें। रोपण हेतु नये बगीचे में सदा रोग रहित एवं प्रमाणित नर्सरी के पौधे ही प्रयोग में लायें। रोग के प्रकोप को रोकने के लिये स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 250 से 500 पी.पी.एम. (250 से 500 मिग्रा. प्रति लीटर) एवं ताम्रयुक्त कवकनाशी दवा 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर पन्द्रह दिन के अंतराल पर दो छिड़काव करें। यह छिड़काव नर्सरी पौधों पर रोपण से पूर्व बगीचों में रोग ग्रस्त टहनियों की कटाई के बाद करें। कागजी नींबू के रोगग्रसित पौधों पर चार छिड़काव फरवरी, जुलाई, अक्टूबर तथा दिसम्बर में करें।

★ आंवला में काले रंग की इल्ली (गांठ बनाने वाला कीट) वृक्ष की शाखाओं और डालियों को खा कर वहाँ पर गांठ बनाती है। यह किसी डाली पे दिखाई दे तो उसे तुंरत ही काटकर निकाल देना चाहिये। इस कीट के नियंत्रण के लिये वर्षा ऋतु से पहले फेनवलरेट 20 ईसी (2 मिली प्रति लीटर) या थायोमिथोक्सम 25 डब्ल्यू. जी. (0.3 ग्राम प्रति लीटर) कीटनाशी के घोल का छिड़काव करना चाहिये।

★ फलदार पौधों को लगाने के लिए 1x1x1 मीटर आकार के गड्ढे खोदकर 10–15 दिन तक खुला छोड़ देवें। प्रति गड्ढे के हिसाब से 15–20 किलो गोबर की खाद मिला देवें। पौधे लगाने से पूर्व 100 ग्राम क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण प्रति गड्ढे के हिसाब से मिला देवें।

सब्जियाँ

★ भिण्डी की वर्षा ऋतु फसल की बुवाई जून–जुलाई माह में करें। भिण्डी की पूसा ए–4, परभनी क्रांति, अर्का–अभय, अर्का अनामिका, वर्षा उपहार किस्मों का 8–10 किलो बीज प्रति हैक्टर की दर से बुवाई करें।

★ फूलगोभी की अगेती किस्मों की बुवाई मई से जून के अंत तक की जाती है। अगेती किस्में अर्ली कुंआरी, पूसा कातकी, पूसा दीपाली, पूसा अर्ली सिंथेटिक आदि प्रमुख किस्में है। अगेती किस्मों के लिये 600 से 700 ग्राम बीज प्रति हैक्टर की दर से बीजों को 2 ग्राम थाइरम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर नर्सरी में बुवाई करें।

★ टमाटर की वर्षाकालीन फसल की तैयार पौध कोखेतों में रोपाई से पूर्व कार्बेन्डिजिम या ट्राईकोडर्मा के घोल में पौधों की जड़ों को 20–25 मिनट उपचारित करने के बाद ही पौधों की रोपाई करें। पौध को खेत में 75 से. मी. की कतार की दूरी रखते हुये 60 से.मी के फासले पर पौधों की रोपाई करें। मेड़ों पर चारों तरफ गेंदा की रोपाई करें। फूल खिलने की अवस्था में फल भेदक कीट टमाटर की फसल में कम जबकि गेंदे की फलियाँ/फूलों में अधिक अंडा देते हैं। खेत की तैयारी के समय गोबर की खाद 250–300 क्विंटल, नत्रजन 100 किलो, फॉस्फोरस 80 किलो एवं पोटाश 60 किलो प्रति हैक्टर की दर से देवें।

★ बैंगन की वर्षाकालीन फसल की तैयार पौध को कतार से कतार के बीच 60 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे के बीच 50 सेंटीमीटर का अंतराल रखते हुये लगाना उचित रहता है। खेत की तैयारी के समय गोबर की खाद 120–150 क्विंटल, नत्रजन 40 किलो, फॉस्फोरस 80 किलो व पोटाश 60 किलो प्रति हैक्टर की दर से देवें।

★ मिर्च की नर्सरी में बुवाई के 40 से 45 दिन बाद पौध रोपण के लिये तैयार हो जाती है। रोपाई कतारों में 60x30 वर्ग सेमी. की दूरी के हिसाब से सांयकाल के समय करे एवं तुरंत बाद सिंचाई कर दें। पौधों को 40

ग्राम एजोस्पाइरिलम 2 लीटर पानी के घोल में 15 मिनट डुबोकर रोपाई करें। मिर्च की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिये 20–25 टन गोबर की सड़ी हुई खाद या 5–10 टन वर्मीकम्पोस्ट रोपाई के 15–20 दिन पहले खेत में मिलाना चाहिये। इसके अलावा रासायनिक उर्वरकों से 120 कि.ग्रा नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरेस एवं 60 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर प्रयोग करना चाहिये। नत्रजन की आधी एवं फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई के पूर्व एवं नत्रजन की शेष आधी मात्रा रोपाई के 45 से 60 दिन बाद देनी चाहिये।

पुष्पोत्पादन

★ वर्षाकालीन मौसमी फूल जैसे गैंदा, बालसम, जीनिया, सूरजमुखी, कोक्स–कॉम्ब आदि की नर्सरी तैयार करें तथा तैयार नर्सरी में झारे से नियमित सिंचाई करते रहें एवं खरपतवार निकालें।

★ क्यारियों में लगी गुलदाउदी से सकर्स को अलग कर लगायें।

★ गैंदा की वर्षाकालीन फसल की पौध कीरोपाई बीज बोने के 25–30 दिनों बाद जब पौधों पर 3–4 पत्तियाँ आने लगे, तैयार क्यारियों में करनी चाहिये। 30 दिन से ज्यादा पुरानी पौध की रोपाई करने से पैदावार में कमी आ जाती है। पौध रोपण की दूरी उगायी जाने वाली किस्म, मृदा की भौतिक दशा, रोपण विधि इत्यादि बातों पर निर्भर करती है। अफ्रीकन गेंदे के पौधों की रोपाई 40x40 सेमी. (पंक्ति से पंक्ति व पौधे से पौधे) की दूरीपर करनी चाहिये। जबकि फ्रेंच गेंदे की रोपाई 20x20 सेमी. की दूरी पर करें। खेत तैयार करते समय 10 से 15 टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद मिट्टी में मिला देवें, इसके अलावा 120 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 80 कि.ग्रा. फास्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश भी प्रति हैक्टर की दर से डालनी चाहिये। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय मिट्टी में मिलाकर देवें तथा शेष बची हुई नाइट्रोजन की आधी मात्रा को दो बराबर भागों में प्रथम रोपाई के एक महीने बाद एवं दूसरी 55–65 दिनों बाद छिड़काव विधि से देवें।

चारा फसलें

★ चारे के लिए ज्वार, लोबिया व बहुकटाई वाली चरी की बुवाई करना चाहिये। वर्षा न होने की स्थिति में पलेवा देकर बुवाई करें।

★ लोबिया के लिए 35–40 किग्रा., ज्वार के लिए 40–45 किग्रा. व बहुकटान वाली चरी के लिए 20–35 किग्रा., बीज प्रति हैक्टर आवश्यक होगा। चारे की गुणवत्ता एवं उपज बढ़ाने के लिए ज्वार के बीज के साथ 10–12 किलो लोबिया का बीज प्रति हैक्टर मिलाकर बोयें।

परख

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र. 1 बाजरा फसल में स्ट्राईगा (रूखड़ी) का नियंत्रण कैसे करें?

प्र. 2 सफेद लट का नियंत्रण किस अवस्था पर संभव है?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब। हमारा पता है:–

उप निदेशक, कृषि (सूचना)
कमरा नम्बर 118, कृषि आयुक्तालय,
पंत कृषि भवन, जयपुर–302005

प्रमुख खरीफ फसलों की उन्नत कृषि तकनीक

फसल	किस्म	पकाव अवधि (दिनों में)	उपज (क्विं/ हैक्टर)	बीज दर (किलो/ हैक्टर)	बुवाई पूर्व उर्वरक (किलो/हैक्टर) ('अ'या' ब' में से किसी एक का उपयोग करें)		खड़ी फसल में यूरिया (किलो / हैक्टर)	कतारों एवं पौधे के बीच दूरी (सेमी.)	विशेष विवरण
					'अ' डी.ए.पी + यूरिया	'ब' एस.एस.पी. + यूरिया			
बाजरा	एम.पी.एम.एच.–17	79–80	26–28	4	65+40 (जोधपुर व जयपुर खण्ड)	200+65	65	40–45X10–15	जोगिया रोग रोधी, सिट्टा रोयेंयुक्त
	एच.एच.बी.67–2	65–70	15–25						अगेती व पछेती बुवाई के लिए उपयुक्त
	आर.एच.बी.–177	70–74	42–43						जोगिया रोग रोधी, सूखा सहनशील
	एच.एच.बी.– 299	80–81	30–32						प्रमुख बीमारियों व कीटों के प्रति प्रतिरोधी
	आर.एच.बी.–234	80–81	30–31						हरित बाली रोग व ब्लास्ट रोग प्रतिरोधी
	आर.एच.बी.–223	70–71	28–30		65+75 (भरतपुर व गंगानगर खण्ड)	200+100	100		जोगिया रोग रोधी, सूखा सहनशील
ज्वार	प्रताप ज्वार–1430	90–95	30–35	10	90+50	250+90	90	45X10–12	बहुउद्देशीय, सामान्य वर्षा, तना छेदक व शीर्ष मक्खी के प्रति सहनशील
	सी.एस.वी.–31	85–90	30–33						पत्ती झुलसा रोग प्रतिरोधक
	सी.एस.वी.–23	110–115	25–30						बहुउद्देशीय किस्म
	एस.पी.एच.–837	85–90	35–40						द्विउद्देशीय, कम व मध्यम वर्षा क्षेत्र
	राज विजय–1862	110–115	35–40						पत्ती धब्बा रोग तथा तना छेदक एवं तना मक्खी के प्रति सहनशील
मक्का	डी.एच.एम. – 117	125–135	60–70	20–25	65+75	200+100	100	60X25	प्रमुख रोग व कीटों के प्रति मध्य प्रतिरोधी
	प्रताप संकर मक्का–3	84–88	55–66						प्रमुख रोग व कीटों के प्रति मध्य प्रतिरोधी
	प्रताप कंचन–2	80–85	35–40						जल्दी पकने वाली किस्म
	एच.क्यू.पी.एम.–1	90–105	40–50						पीले दाने व 9–10 प्रतिशत प्रोटीन वाली किस्म
	प्रताप मक्का–9	85–89	35–40						वर्षा पोषित क्षेत्र के लिये उपयोगी
	प्रताप संकर मक्का–1	80–82	35–38						वर्षा पोषित क्षेत्र के लिये उपयोगी
	डी.एच.एम.– 121	90–95	45–50						दाने नारंगी पीले
ग्वार	एच.जी.–2–20	90–100	8–9	15–20	80+0	250+20	–	30X10	जीवाणु पत्ता अंगमारी व जड़गलन रोग के प्रति प्रतिरोधी
	आर. जी. सी.–1017	92–99	10–14						अर्द्धशुष्क, कम वर्षा वाले क्षेत्र
	आर.जी.सी.–1031 (ग्वार क्रांति)	110–114	11–16						अर्द्धशुष्क, कम वर्षा वाले क्षेत्र
	आर.जी.सी.–1055 (ग्वार उदय)	90–100	11–22						अर्द्धशुष्क, असिंचित क्षेत्रों के लिए
	आर.जी.सी.–1038	100–105	11–22						रोगों के प्रति प्रतिरोधी
	आर.जी.सी.–1033	95–100	15–25						अनेक रोगों के रोग प्रतिरोधी
मूँगफली	आर.जी.–578	110–122	16–18	60–80 (फैलने वाली किस्म) 100 (झुमका किस्म)	130+0	375+35	–	40–45X10–15 (फैलने वाली) 30X10 (झुमका)	अर्ध विस्तारित किस्म, असिंचित क्षेत्र के लिये उपयुक्त
	आर.जी.– 518	115–120	28–30						कॉलर रोट रोग के प्रतिरोधी
	एच.एन.जी.–69	120–125	25–28						अर्ध विस्तारी किस्म
	आर.जी.–559–3	120–125	31–32						इस किस्म में बीमारियों का प्रकोप कम होता है।
	आर.जी.–425 (राज दुर्गा)	125–130	32–36						अर्द्धविस्तारी बारानी, सिंचित, कालर रॉट रोधी
	आर.जी.–510 (राज. मूंगफली–1)	125–130	26–32						फैलने वाली, रेतीली दोमट मिट्टी, सिंचित क्षेत्र, गलकट, तना गलन, टिक्का, विषाणु गुच्छा रोगरोधी
	आर.जी–382 दुर्गा	128–133	22–25						फैलने वाली, रेतीली दोमट, सिंचित क्षेत्र
तिल	आर.टी–351	80–85	8–10	2.5	50+0	150+25	25	30–35X15 (शाखा वाली) 30X10 (शाखा रहित)	पर्ण कुंचन, फिलोड़ी, जड़गलन प्रतिरोधी
	आर.टी.–125	75–85	9–12	2.5					अल्पावधि, 3–5 शाखाएं, भारी मिट्टी हेतु उपयुक्त
	आर.टी.–127								सूखा रोधी, जड, तना गलन, फिलोड़ी रोग प्रतिरोधी
	आर.टी–346 (चेतक)	83	7–9	2.5					सूखा सहनशील, पर्ण कुंचन, फिलोड़ी रोग प्रतिरोधी
मूंग	एस. एम. एल.–832	60–65	11–12	15–20	90+10	250+45	–	30X10	पीला मोजेक व थ्रिप्स के प्रति सहनशील
	आर.एम.जी. –268 / 344	65–70	10–12						जायद, खरीफ हेतु उपयुक्त, झुलसा, पत्ती धब्बा रोगरोधी
	एम.यू.एम.–2	60–70	12–15						समस्त राजस्थान (गंगानगर खण्ड के अतिरिक्त) सूखा सहनशील
	एम.एच.– 421	60–65	11–12						पीत विषाणु रोग के प्रति सहनशील
	जी.एम.–4	61–68	13–14						एक साथ पकाव, दानें सुड़ौल व बड़े
	आर.एम.जी.–492	65–70	14–18						खरीफ, जायद हेतु उपयुक्त, झुलसा रोग रोधी
उड़द	पन्त यू–31	70–80	10–12	12–15	90+10	250+45	–	30X10	मध्यम किस्म
	आर.बी.यू–38 (बरखा)								पीतशिरा विषाणु रोग, चित्ती जीवाणु रोग, छाछ्या रोग सहनशील
	प्रताप उड़द–1	73–76	10–12						शीघ्र पकने वाली, दाना हल्का काला
अरहर	आई.सी.पी.एल. –151(जागृति)	120–140	12–20	15–20 (मिलवां फसल में 7 किलो)	130+0	375+ 45	–	50–60X10–15	शीघ्र पकने वाली, दाना पीला बड़ा, भारी दोमट मिट्टी के लिए
	आई.सी.पी.एल.–87	140–150	15–20						मध्यम, गेहूँ फसल चक्र हेतु उपयुक्त, फाइटोपथोरा बीमारी रोगरोधी
	पूसा–992	150–160	14–18						पूसा से विकसित किस्म, दानें बड़े व सुड़ोल
मोठ	सी.जेड.एम.–2	65–67	8–10	10–15	66+0	190+25	–	45X15–20	जल्दी पकने वाली, पित शिरा मोजेक प्रतिरोधी
	आर.एम.ओ–2251	62–65	6–9						पीतशिरा मोजेक विषाणु रोग के प्रति मध्य प्रतिरोधी
	आर.एम.ओ–257								जल्दी पकने वाली, पितशिरा विषाणु प्रतिरोधी
	आर.एम.ओ–225								शुष्क, अर्द्धशुष्क क्षेत्र, सूखा सहनशील
	आर.एम.ओ–435 (मरु बहार)								शीघ्र पकने वाली
सोयाबीन	पी.के.–472	100–115	20–25	80	90+10	250+45	–	30X10–15	पीले दानें, सिंचित, असिंचित क्षेत्र
	जे.एस.–20–29	93–96	25–30						पीतशिरा मोजेक, जीवाणु धब्बा, अंगमारी प्रतिरोधी
	जे.एस.–93–05	85–90	25–30						जीवाणु पत्ती सहनशील, जल्दी पकने वाली
	जे.एस.–20–34	86–88	22–25						प्रमुख रोगों व कीटों के प्रति प्रतिरोधक
	जे.एस. 95–60	85–88	20–22						मध्यम ऊंचाई, जड़ गलन, बहुपर्णीय बीमारी सहनशील
	प्रताप सोया–45	95–98	25–30						मध्यम ऊंचाई, गर्डल बिटल, तम्बाकु इल्ली, तना मक्खी, पीत विषाणु रोग, चारकॉलरोट सहनशील
चँवला	आर.सी. 19	60–65	7–9	15–20	90+10	250+45	–	30X10	भुरे लाल दानें, एक साथ पकाव
	आर.सी. 101	60–65	8–10						सफेद दानें, जल्दी पकाव
अरण्डी	जी.सी.एच –8	150–180	17–20	12–15	90+10	250+45	–	90–120X60 (सिंचित)	तेल की मात्रा 48 प्रतिशत तक पाई जाती है।
	जी.सी.एच –7	90–110	24–25					60X45 (असिंचित)	संकर किस्म, सूखा रोधी

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"
घर बैठे वर्षभर ***खेती री बातां*** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कमरा नं.–250, कृषि आयुक्तालय, पंत कृषि भवन, जयपुर (302005) के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। **स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड़ नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।**

डाक पं.सं. **JaipurCity/409/2024-26**
आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–
उप निदेशक, कृषि (सूचना)
118, कृषि आयुक्तालय, जनपथ
पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

प्रेषिती–

सफेद लट का समेकित प्रबन्धन

सफेद लट कीट के प्रकोप से खरीफ फसलों के बचाव के उपाय केवल दो ही परिस्थितियों में किए जा सकते हैं। पहली जब यह कीट वयस्क (भृंग) अवस्था में जब पेड़ों पर हो और दूसरी जब यह लट की प्रथम अवस्था में हो। इस कीट के अनोखे जीवन चक्र (साल में एक पीढी) के कारण यह दोनों ही अवस्थाएं साल में केवल एक बार ही आती है वह भी बहुत कम समय के लिए। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि इसी समय पर कीट नियत्रंण के समेकित उपाय किए जावें।

इस कीट की प्रौढ़ (भृंग) व लट दोनों ही अवस्थाएं नुकसान पहुंचाती हैं। लट अवस्था जमीन में रहकर जीवित पौधों की जड़ों को खाती हैं। छोटी–छोटी लटें अण्डों से निकलते ही पौधों की जड़ों को खाना शुरू कर देती हैं जिससे पौधा पीला पड़ जाता है, बढ़वार रुक जाती है एवं अंत में पौधा मर जाता है। लटों की तरह इनके भृंग भी सर्वहारी होते हैं तथा ये अनेक पेड़ों की पत्तियों को खाकर नुकसान पहुंचाते हैं। यह बहुभक्षी लट प्रायः खरीफ की फसलों मूंगफली, मूंग, मोठ, बाजरा, सब्जियों इत्यादि के पौधों की जड़ों को काटकर हानि पहुंचाती है।

सफेद लट का जीवन चक्र

सफेद लट एक वर्ष में केवल एक ही पीढ़ी पूर्ण करती है। मानसून अथवा मानसून से पहले की पहली अच्छी वर्षा के बाद इस कीट के भृंग सायंकाल गोधूली वेला (लगभग सायं 7:30 बजे से 7:45 बजे के बीच) के समय प्रतिदिन भूमि से बाहर निकलते हैं। पहले मादा भृंग जमीन से निकलकर वृक्षों पर बैठती है तथा अपने शरीर से एक विशेष प्रकार का रसायन (फेरोमोन) वायु में विसर्जित करती है। नर भृंग भूमि से बाहर निकलकर रसायन से आकर्षित होकर वृक्षों पर बैठी मादा भृंगों की ओर जाते हैं, तथा पत्तियां खाना प्रारम्भ कर देते हैं। भृंग रातभर वृक्षों पर रहते हैं तथा प्रातः सूर्योदय से पहले पुनः भूमि में चले जाते हैं और अगले दिन सायंकाल फिर निश्चित समय (गोधूली वेला) पर भूमि से निकलकर वृक्षों पर जाते हैं। यह क्रम लगभग 4–5 सप्ताह तक चलता है। मादा भृंग गीली मिट्टी में लगभग 10 सेमी. गहराई पर अण्डे देती है। अण्डों में से 7–13 दिन पश्चात् छोटी लट निकलती है जिन्हें प्रथम अवस्था की लट कहा जाता है। लट का पूर्ण समयकाल करीब 12–15 सप्ताह का होता है लट की अन्तिम अवस्थाएं पौधे की जड़ों को काटती है और अधिक नुकसान करती है। इस प्रकार यह जुलाई से मध्य अक्टूबर तक पौधे की जड़ों को खाती है।

इसके बाद यह लटें भूमि में गहराई में चली जाती हैं और करीब 40–70 सेमी. गहराई पर शंकु में परिवर्तित हो जाती है। शंकु से लगभग 2 सप्ताह में प्रौढ़ भृंग निकल आते हैं। जो अगली वर्षा आने तक भूमि की गहराई में लगभग 1 मीटर तक चले जाते हैं। इस समय यह भृंग निष्क्रिय होते हैं। इसी निष्क्रियता की अवस्था में यह भृंग अगली वर्षा तक भूमि में पड़े रहते हैं। इस समय मानसून पूर्व वाली भारी वर्षा के बाद भूमि से बाहर निकलकर अपना अगला जीवन चक्र आरम्भ कर देते हैं। इस प्रकार एक वर्ष में इस कीट की एक ही पीढ़ी पूर्ण होती है।

प्रौढ़ कीट (भृंग का नियंत्रण)

- सफेद लट के परपोषी वृक्षों जैसे नीम, बेर, खेजड़ी, अमरुद एवं गुलर इत्यादि का चुनाव आस–पास के वृक्षों के समुह में से करें।
- परपोषी वृक्षों में चिन्हित वृक्षों पर फेरोमोन (एनिसोल) शाम के समय लगावें। भृंग 15–20 मीटर की दूरी से फेरोमोन की तरफ आकर्षित होते हैं। अतः प्रति हैक्टर 3–4 परपोषी वृक्षों पर ही फेरोमोन लगावें व उन्हीं पर कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।
- इन पेड़ों पर मानसून की शुरुआत होते ही दिन के समय इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल की 1.5 मिली या क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. का 2 मिली मात्रा प्रतिलीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- भृंग प्रकाश के प्रति आकर्षित होते हैं। अतः इन्हें प्रकाशपाश पर आकर्षित कर, एकत्रित कर मिट्टी के तेल मिले पानी में डालकर नष्ट करें।

लट अवस्था में नियंत्रण

खरीफ की विभिन्न सिंचित व असिंचित फसलों में बुवाई के समयानुसार लट नियंत्रण के उपाय अलग–अलग होते हैं।

वर्षा के साथ बोई जाने वाली फसलों में लट नियंत्रण

बीज उपचार

- मूंगफली की फसल में सफेद लट की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. 3 मि. ली. प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार कर बुवाई करें। उपचारित बीज को 2 घण्टे छाया में सुखाकर बुवाई करनी चाहिए।
- बाजरे के एक किलो बीज में 3 किलोग्राम कार्बोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत या क्यूनालफॉस 5 प्रतिशत कण मिलाकर बुवाई करें।

भूमि उपचार

- सफेद लट प्रभावित क्षेत्रों में क्यूनालफॉस 5 प्रतिशत कण 30 किलो या कार्बोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत कण 25 किलो प्रति हैक्टर बुवाई से पूर्व हल द्वारा कतारों में ऊर देवें तथा इन्हीं कतारों पर बुवाई करें।

खड़ी फसल में सफेद लट का नियंत्रण–

- सफेद लट नियंत्रण हेतु 4 लीटर क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई.सी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल 300 मि. ली. प्रति हैक्टर 100 किलो बजरी मे मिलाकर खड़ी फसल में भुरकाव कर सिंचाई करें। यह उपचार मानसून की वर्षा के 21 दिन बाद भृंगों की संख्या के आधार पर करें।

पृष्ठ 1 का शेष भाग.....**फलदार पौधों की रोपाई...**

फल	गड्डे से गड्डे की दूरी	
	सामान्य बागवानी	सघन बागवानी
आम	9X9 मीटर	5X5 मीटर
आम्रपाली व मल्लिका किस्में	5X5 मीटर	2.5X2.5 मीटर
आँवला	8X8 मीटर	–
अमरुद	6X6 मीटर	3X3 मीटर
अनार	5X5 मीटर	5X3 मीटर
पपीता	2X2 मीटर	–
संतरा व नींबू	6X6 मीटर	–

गड्डे की भराई

गड्डों की खुदी हुई मिट्टी में से कंकड़, पत्थर, घास–फूस आदि को अलग करें एवं गड्डों को 15–20 दिन खुला रखें ताकि मिट्टी में मौजूद कीड़े तथा रोग के जीवाणु गर्मी से नष्ट हो जायें। गड्डे भरने के लिये ऊपर की डेढ़ फीट मिट्टी में मींगणी की या सड़ी गोबर की खाद एवं एक किलो सुपर फास्फेट मिलायें। यदि खेत की मिट्टी काली या भारी हो तो ऐसे गड्डे में एक तिहाई भाग खेत की मिट्टी, एक तिहाई भाग बालू, एक तिहाई भाग गोबर या मींगणी की खाद अच्छी तरह मिलाकर भरनी चाहिये। दीमक से पौधों को बचाने के लिये गड्डे में क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 100 ग्राम प्रति गड्डे में डालें। यह भी ध्यान रखें कि गड्डे, भूमि की सतह से चार अंगुल ऊपर तक भरें। गड्डे भरने के बाद यदि वर्षा ना हो तो सिंचाई कर दें ताकि गड्डों की मिट्टी बैठ जायें व बीच की हवा निकल जायें।

गड्डे में पौधे लगाना

फलदार पौधे लगाने के लिये वर्षा ऋतु (जुलाई एवं अगस्त माह) तथा बसंत ऋतु (फरवरी एवं मार्च माह) का समय अच्छा रहता है। प्रायः एक वर्ष की आयु के पौधों को गड्डों में लगाया जाता है। यदि पौधा पॉलीथीन की थैली में पैक हो तो ब्लेड से थैली को चीरा लगाकर थैली हटा देवें। तैयार किये गये गड्डे में से पौधे में लगी मिट्टी के गोले के बराबर मिट्टी हटा लेवें, फिर पौधों को लगाकर तुरन्त पानी देवें। पौधे के तने के चारों ओर ढ़लान बना देना चाहिये जिससे सिंचाई का पानी तने के पास न लग सके। पौधा गड्डे के बीच में सीधा रहना चाहिये। यदि पौधे ग्राफ्टेड हो तो जोड़ को मिट्टी के अन्दर भूलकर भी नहीं दबायें। पौधे लगाने का सबसे सही समय सायंकाल का होता है, ताकि रात में मिट्टी में नमी रहने से पौधे की जड़े जमीन में अच्छी तरह जम जायें।

देखभाल

सामान्यतः एक माह के अन्दर पौधे जड़े पकड़ लेते है। हल्की मिट्टियों में पौधे लगाने के बाद शुरु के 2–3 दिन तक रोजाना हल्का पानी देवें व उसके अगले चार–पाँच दिन तक एक दिन छोड़ कर एक दिन पानी देवें। इसके बाद एक सप्ताह के अन्तर से पानी देते रहें व सिर्फ इतना ही पानी देवें की मिट्टी में नमी बनी रहे व यदि वर्षा हो जाये तो पानी न देवें। पौधे लगाने के बाद जमीन से कलमी जोड़ के नीचे से निकलने वाली सभी देशी फुटानों को 9 माह बाद ही तोड़े, ताकि पौधे की पत्तियाँ भोजन बनाते रहने से पौधों को मजबूती मिल जायें।

- पौधे लगाने के बाद उनकी अच्छी बढ़वार के लिये नियमित रुप से प्रति वर्ष सिफारिश के अनुसार खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें।
- शुरु के दो वर्षों तक सिफारिश की हुई उर्वरकों की मात्रा को वर्ष में दो बार (जुलाई–अगस्त तथा फरवरी–मार्च माह) में बराबर–बराबर मात्रा में बांटकर देना चाहिये, ताकि डाली गयी उर्वरकों की मात्रा का पूर्ण उपयोग हो सकें।
- पहले से स्थापित बगीचों में पौधों पर फूल आते समय सिंचाई नहीं करें। इस समय सिंचाई करने से फूलों व फलों का गिरना बढ़ जाता है, जिससे पैदावार में गिरावट आती है।

आजमा कर तो देखिये

- कृषक धोखाधड़ी से बचने के लिये बीज, उर्वरक व दवा खरीदते समय पक्का बिल जरुर लें। बिल न देने पर निकट के कृषि कार्यालय में शिकायत करें।
- मिट्टी की जाँच रिपोर्ट के आधार पर ही उर्वरक की मात्रा काम में लें। तिलहनी एवं दलहनी फसलों में डी.ए.पी. के स्थान पर सिंगल सुपर फॉस्फेट काम में लें।
- तिलहनी व दलहनी फसलों में अन्तिम जुताई के समय 250 किलोग्राम जिप्सम प्रति हैक्टर डालें।
- ग्रीष्मकालीन जुताई–रबी फसलों की कटाई के तुरन्त बाद मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी गर्मी की जुताई करें। इससे खरपतवार, कीट, सूत्र कृमि एवं बीमारियों के नियंत्रण एवं वर्षा के पानी का अधिक संग्रहण करने में मदद मिलती है।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक आयुक्त कृषि, कृषि विभाग, राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय, जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक व मुद्रक – सुश्री चिन्मयी गोपाल
सम्पादक – गिरधर सिंह देवल
सह सम्पादक – ज्योति सोनी
परामर्श – रुड़मल कुमावत